अप्रैल 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह अप्रैल 2026 में प्रकाशित है

अक्षय पात्र साधना

(पुरुषोतम मास - 17 मई 2026 से 15 जून 2026)

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है उसका जीवन अक्षय हो, उसके जीवन पात्र में सदैव पूर्णता हो उसे जीवन के नवरस-नवरंग की प्राप्ति हो...। इसी हेतु सिद्धाश्रम योगियों ने अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त में अथवा उस दिन संकल्प कर किसी भी शुभ मुहूर्त में अक्षय पात्र साधना सम्पन्न करने का विधान किया।

अक्षय पात्र साधना सिद्धिदायक है और तुरन्त चमत्कारिक ढंग से प्रभाव देने वाली है। यदि कोई साधक मनोयोगपूर्वक इसे सम्पन्न करे तो अक्षय पात्र साधना के माध्यम से साधक जिस वस्तु, पदार्थ, स्वर्ण, वस्त्र या रत्न की कामना करता है, वह अवश्य प्राप्त होता है और जीवन भर वह अक्षय पात्र उसके लिए उपयोगी बना रहता है।

अक्षय पात्र की विशेषता यह होती है कि इस पात्र का निर्माण उस समय किया जाता है जब सूर्य स्वयं अपने नक्षत्र पर आरूढ़ हो। ऐस विशेष मुहूर्त में ही अक्षय पात्र का निर्माण कर उसे सूर्य साधना में निर्दिष्ट अठारह संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। अक्षय पात्र को यजुर्वेदीय सूर्योपनिषद् मंत्रों से सम्पुटित किया जाता है। ऐसे अक्षय पात्र पर ही साधना सम्पन्न की जानी चाहिए।

- अक्षय पात्र साधना न्यौ. - 750/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 07)

कनकधारा यंत्र

(पुरुषोतम मास - 17 मई 2026 से 15 जून 2026)

कनकधारा यंत्र का घर, व्यापार स्थल में स्थापन लक्ष्मी प्राप्ति के लिये अत्यन्त दुर्लभ और रामबाण प्रयोग है। कनकधारा यंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होता है। यह यंत्र दरिद्रता को दूर कर धनाधिपति बनने के योग बनाता है और अष्ट सिद्धि व नव निधियों की प्राप्ति होती है।

गुरुआज्ञानुसार साधकों के कल्याण हेतु रवि और गुरु पुष्य नक्षत्र में विशेष प्राण प्रतिष्ठा क्रिया द्वारा कनकधारा यंत्र को सिद्ध किया गया है। शुभ मुहूर्त में कनकधारा साधना सम्पन्न कर अपने जीवन में आ रही धन सम्बन्धी बाधा को समाप्त कर सके। साधक मात्र कनकधारा यंत्र को स्थापित कर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से धन प्राप्ति के मार्ग में आ रही बाधाओं को समाप्त कर सकता है और अपने जीवन को दारिद्रय मुक्त कर सकता है।

कनकधारा यंत्र के घर, व्यापार स्थल में स्थापन मात्र से ही नए आर्थिक स्रोत बनते है और आर्थिक उन्नति प्रारम्भ हो जाती है, व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है। पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिए कनकधारा यंत्र को घर, व्यापार स्थल में अवश्य स्थापित करना चाहिए।

- कनकधारा यंत्र न्यौ. - 600/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 59)

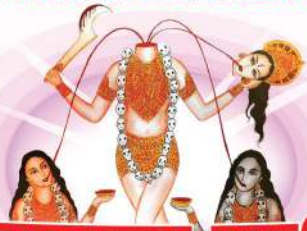

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता जयंती - 1 मई 2026
सोमवती अमावस्या - 15 जून 2026
गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई 2026 से 22 जुलाई 2026

तंत्र की दस महाविद्याओं में छिन्नमस्ता एक अत्यन्त ही उच्चकोटि की शक्ति है। छिन्नमस्ता महाविद्या साधना को सिद्ध करने से साधक जीवन के सभी सुखों को प्राप्त करता है। उसके जीवन में धन प्राप्ति, शत्रुबाधा पर विजय, रोग शान्ति तथा उसके परिवारजनों का जीवन पूर्ण रूप से सुरक्षित रहता है। छिन्नमस्ता महाविद्या साधना तो तीव्र शत्रुहन्ता साधना है, इसके प्रभाव से तीक्ष्ण शत्रु भी निस्तेज हो जाता है। छिन्नमस्ता 'विरुद्ध तंत्र संहारिणि' देवी है, आपके विरुद्ध किये तंत्र का नाश करती है।

व्यापार-कारोबार विपन्न अवस्था में चल रहा हो, तो इस साधना के बाद व्यापार-कारोबार में सुदृढ़ता प्राप्त होती है और आर्थिक अभाव समाप्त हो जाते हैं तथा धन का आगमन बराबर बना रहता है। छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। श्री भैरव तन्त्र में कहा गया है कि छिन्नमस्ता आराधना से साधक जीव भाव से मुक्त होकर शिव भाव को प्राप्त कर लेता है। छिन्नमस्ता की कृपा एवं आशीर्वाद से ही योगी, सृष्टि में मोह-माया और भोग से मुक्त होकर, जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करते हैं।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650/-
(अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 16)

छिन्नमस्ता शक्तिपात महादीक्षा

छिन्नमस्ता जयंती - 1 मई 2026
सोमवती अमावस्या - 15 जून 2026
गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई 2026 से 22 जुलाई 2026

महाविद्या छिन्नमस्ता शक्तिपात दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक तंत्र बाधाओं को अपने जीवन से समाप्त कर सकता है। तंत्र प्रयोग से शरीर का तेज कम हो जाता है, कार्य में रुकावटें आती है, व्यापार बंध जाता है। इन सब बाधाओं के निराकरण हेतु छिन्नमस्ता दीक्षा परम आवश्यक है।

कैसा भी विरुद्ध तंत्र हो, चाहे किसी भी प्रकार का जादू, टोना-टोटका किया हुआ हो छिन्नमस्ता शक्ति के प्रभाव से उसे समाप्त किया जा सकता है। छिन्नमस्ता समस्त पापों का नाश करने वाली है, जीवन में किसी भी प्रकार के रोग, दुःख, आधि-व्याधि इन सब का नाश छिन्नमस्ता शक्ति द्वारा संभव है। जीवन में किसी प्रकार की भी समस्या हो जैसे शत्रु बाधा, कोर्ट-कचहरी का भय, कारोबार की समस्या, आर्थिक समस्या इन सब का निराकरण छिन्नमस्ता शक्तिपात दीक्षा द्वारा संभव है।

शिष्य के जीवन का परम सौभाग्यशाली क्षण होता है जब सद्गुरु उसे छिन्नमस्ता शक्तिपात दीक्षा (सात चरण) प्रदान करते हैं। सद्गुरुदेव से छिन्नमस्ता महादीक्षा प्राप्त कर, जब साधक छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करता है तो जीवन के सभी सुखों से युक्त हो जाता है।

- छिन्नमस्ता शक्तिपात महादीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. 3100/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 19)

नृसिंह शाक्त साधना

पुरुषोत्तम मास 17 मई 2026 से 15 जून 2026

सिंह को जंगल का राजा बनने के लिए ना तो कोई अभिषेक किया जाता है ना कोई संस्कार। अपने गुण और पराक्रम से वह स्वयं ही जंगल के राजा के पद को प्राप्त कर लेता है। पराक्रम का अर्थ है - एक या एक से अधिक व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा होने पर अपने लिए विजय सुनिश्चित करना। इसमें चातुर्य, सूझबूझ और शौर्य बल का विविध अनुपातों में समन्वय होता है।

पराक्रम, साधक के लिए अति आवश्यक तत्व है। जब आपमें पराक्रम जाग्रत होता है तब जीवन की व्याधियां पीड़ा, निराशा, मानसिक उपद्रव सब समाप्त हो जाते हैं। भगवान विष्णु का नृसिंह अवतरण गूढ़ संदेश छिपाए हुए है, भगवान विष्णु का नृसिंह अवतार मनुष्यों को सिंह के समान पराक्रमी बनने का संदेश देता है। वास्तव में सफल जीवन तो उसका ही कहा जा सकता है, जो अपने जीवन के लक्ष्यों को सिंह की भांति झपटकर प्राप्त करने की क्षमता से युक्त हो।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 25)

नृसिंह दीक्षा

पुरुषोत्तम मास 17 मई 2026 से 15 जून 2026

पराक्रम का अर्थ है दो या दो से अधिक व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा की स्थिति में विजयी होना। जो प्रतिस्पर्धा में विजयी होता है उसका पराक्रम अधिक होता है। पराक्रम के बिना मनुष्य का जीवन अर्थहीन है। पराक्रम का यह भाव नृसिंह साधना-दीक्षा से ही संभव है।

अभाव, तनाव, पीड़ा (शारीरिक, मानसिक अथवा दोनों), दारिद्र्य जैसे राक्षसों की समाप्ति नरकेसरी की ही क्षमता से हो सकती है। रग-रग में सिंह की ही लपक और शौर्य से ही जीवन की समस्याओं पर झपट्टा मार सकते है।

बाधाएं तो नित नये स्वरूप में आती रहती हैं लेकिन जो साधक दृढ़ निश्चयी होते हैं, जिनके मन में सर्वोच्च बनने का भाव हिलोरे लेता है उन्हें नृसिंह साधना एवं दीक्षा सम्पन्न कर अपने जीवन में एक नया ओज व क्षमता प्राप्त करनी चाहिए। इस हेतु इस समय-समय पर नृसिंह साधना अवश्य सम्पन्न करें, सद्गुरुदेव से नृसिंह दीक्षा ७ चरणों में अवश्य प्राप्त करें।

- नृसिंह दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 2100/- (अप्रैल 2026 पृष्ठ सं. 28)